बैंको का निजीकरण हुआ तो फिर उपभोक्ताओं की बचत की सुरक्षितता का क्या?

निजी क्षेत्र में नये जमाने की यस बैंक जब डूब रही थी तब उसे सार्वजनिक क्षेत्र की स्टेट बैंक ने बचाया। निजी क्षेत्र की कराड बैंक जब डूब रही थी तब उसे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ इंडिया ने बचाया। निजी क्षेत्र में नये जमाने की ग्लोबल ट्रस्ट बैंक जब डूब रही थी तब उसे सार्वजनिक क्षेत्र की ओरिएन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स ने बचाया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इन निजी बैंकों को न बचाते तो फिर.. .. जो पुणे के रुपी बैक के, मुम्बई के पीएमसी बैंक के उपभोक्ताओं के साथ हुआ वही इन बैंक के उपभोक्ताओं का होता। रुपी बैंक के उपभोक्ता 8 साल बाद भी रास्ते पर खड़े हैं। पीएमसी बैंक के उपभोक्ताओं मे 100से ज्यादा उपभोक्तांओं की दुर्भाग्यवश मौत भी हुयी है। अपने पैसे डूब जाने का सदमा लगकर उनकी मौत हुई या पैसो के बिना वे इलाज नहीं कर पाये है, इसलिए बिमारी के कारण वे मर गये। कई लोगों ने आत्महत्या कर अपनी जीवनयात्रा समाप्त कर दी है। सार्वजनिक क्षेत्र की बैंको ने निजी क्षेत्र की बैंकों का जहर निगल लिया इसलिए निजी बैंकों के उपभोक्ता बच गए किंतु सरकार सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों का निजीकरण करना चाह रही है। ऐसा अगर होता है तो फिर जब कल निजी बैंक डूबते हैं...तो उन्हें कौन बचायेगा?

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों का निजीकरण हुआ तो इनमें जमा की हुई 10.43 लाख करोड की जमापूंजी असुरक्षित हो जाएगी। जनता को हमेशा एक अस्थिर और असुरक्षित जीवन का सामना करना पडेगा। **हम जनता जनार्दन से गुजारिश करते हैं कि जागते रहो...रात दुश्मनों की है। सरकार कोई भी समय सार्वजनिक क्षेत्र की बैकों के निजीकरण का निर्णय ले सकती है! सरकार की यह चाल नाकाम करने के लिए हमें अपना आवाज ज्यादा से ज्यादा बुलंद करना होगा। आखिरकार जनमत के आगे सरकार को झुकना ही पड़ेगा।**

चलो तो फिर हम बैंक उपभोक्ता और कर्मचारी एकजुट होकर सरकार की यह कुटिल चाल नाकाम कर दें।

महाराष्ट्र स्टेट बँक एम्प्लॉईज फेडरेशन
(ऑल इंडिया बैंक एम्प्लॉईज असोसिएशनला संलग्न)
AIBEA